राजस्थान के वनस्थली में स्थित वनस्थली विद्यापीठ के वार्षिक समारोह में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का सम्बोधन

वनस्थली विद्यापीठ की माननीय कुलपति, प्रो. इना आदित्य शास्त्री जी;

संकाय के विद्वान सदस्यगण:

स्टाफ के सदस्यगण

गणमान्य अतिथिगण;

प्रिय विद्यार्थियो; और

देवियो एवं सज्जनो :

<u>सर्वप्रथम बधाई</u>

वनस्थली विद्यापीठ के इस वार्षिक सम्मेलन में आप सभी के बीच आकर अत्यंत खुशी हो रही है। वनस्थली विद्यापीठ को हमारे देश में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी राष्ट्रीय संस्थानों में है।

मैं शिक्षा के इस मंदिर की गौरवशाली यात्रा की उपलब्धियों के लिए आप सभी को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

वनस्थली विद्यापीठ लगभग नौ दशकों से महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के नेक काम में निरंतर प्रयासरत है। यह आपकी अटूट प्रतिबद्धता, संकल्प और दृढ़ता का प्रमाण है।

इस अवसर पर, मैं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर इना आदित्य शास्त्री जी और इस महान संस्थान से जुड़े सभी लोगों को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने मुझे हमारे देश के प्रतिभाशाली युवाओं के साथ बातचीत करने का अनूठा अवसर दिया।

<u>वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना पंडित हीरालाल शास्त्री की दूरदर्शिता का परिणाम</u>

मित्रो, वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना महान पथ प्रदर्शक और सामाजिक कार्यकर्ता, पंडित हीरालाल शास्त्री की दूरदर्शिता का परिणाम है।

वर्ष 1927 में पंडित शास्त्री जी ने अपने संकल्प को साकार करने के लिए वनस्थली को चुना और बालिकाओं को शिक्षित बनाने के सामाजिक कार्य के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया।

इसी संकल्प और समर्पण के परिणाम स्वरूप वनस्थली विद्यापीठ की नींव रखी गई। वे राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे बड़े नेताओं में गिने जाते हैं। उन्होंने संविधान सभा के सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

भारत की स्वतंत्रता के बाद, पंडित हीरालाल शास्त्री को तत्कालीन जयपुर राज्य का मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया था। बाद में उन्होंने राजस्थान के पहले मुख्यमंत्री का पद भी संभाला। एक मजबूत, एकीकृत और प्रगतिशील राजस्थान की नींव रखने का श्रेय उन्हीं को जाता है। बाद में वे सांसद भी बने।

<u>श्रीमती रतन शास्त्री ग्रामीण राजस्थान की महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व</u>

ग्रामीण पुनर्गठन और महिला सशक्तिकरण की दिशा में पंडित शास्त्री के प्रयासों को उनकी पत्नी श्रीमती रतन शास्त्री ने पूरा समर्थन प्रदान किया। श्रीमती रतन शास्त्री ग्रामीण राजस्थान की महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व थीं।

उन्होंने पर्दा प्रथा को त्याग दिया और महिलाओं और लड़कियों को एक साथ पढ़ने के उद्देश्य से अपने घरों की चारदीवारी से बाहर आने के लिए प्रेरित किया।

श्रीमती रतन शास्त्री की नि:स्वार्थ समाज सेवा का सम्मान करते हुए उन्हें पद्मश्री और पद्मभूषण से सम्मानित किया गया था। श्रीमती रतन शास्त्री और पंडित हीरालाल शास्त्री इस महान संस्था के विकास के पीछे प्रेरक शक्ति बने हुए हैं।

<u>शिक्षा के इस मंदिर की कुलपति तथा प्रबंधन, संकाय और प्रशासन के सभी गणमान्य सदस्यों की सराहना</u>

मैं शिक्षा के इस मंदिर की कुलपति तथा प्रबंधन, संकाय और प्रशासन के सभी गणमान्य सदस्यों की सराहना करता हूं कि उन्होंने गत वर्षों के दौरान निःस्वार्थ सेवा और समर्पण भाव के साथ दूरदर्शी नेता, पंडित शास्त्री जी के स्वप्न को साकार किया है। आप सभी के प्रयासों का ही परिणाम है कि आज वनस्थली विद्यापीठ की गिनती महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने वाली संस्था के रूप में देश की सबसे प्रतिष्ठित संस्थाओं में होती है।

मैं शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए इस संस्था से जुड़े सभी लोगों की सराहना करता हूं।

इस संस्था ने लगभग 90 वर्ष पूर्व एक ऐसे विद्यालय के रूप में शुरुआत की थी जिसमें केवल छह विद्यार्थी थे। आज यह संस्थान महिला शिक्षा ही नहीं बल्कि शिक्षा का एक उत्कृष्ट संस्थान है। यहाँ के प्रबंधन और संकाय के सदस्यों और छात्रों के योगदान के बिना यह संभव नहीं था।

संस्था की स्थापना राष्ट्रवाद और भारतीय संस्कृति की नींव पर

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि इस संस्था की स्थापना राष्ट्रवाद और भारतीय संस्कृति की नींव पर की गई है जिसका उद्देश्य पूर्व के आध्यात्मिक मूल्यों और पश्चिम की वैज्ञानिक उपलब्धियों का समागम करना है।

मैं इस संस्था द्वारा विकसित पंचमुखी शिक्षा की अवधारणा से बहुत प्रभावित हूं जिसमें शिक्षा के पांच सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं यथा शारीरिक, व्यावहारिक, सौंदर्यबोध, नैतिक और बौद्धिक शिक्षा को शामिल किया गया है।

ये सही मायने में भारतीय समाज और संस्कृति के मूल्यों को दर्शाते हैं। इसके तहत छात्राओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया गया है।

महिला शिक्षा हमारी संस्कृति और सभ्यता का अभिन्न अंग

मैं सभी छात्राओं से यह कहना चाहता हूँ कि आप सभी वास्तव में भाग्यशाली हैं जिन्हें ऐसी प्रतिष्ठित संस्था से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

भारत में महिला शिक्षा का गौरवशाली इतिहास रहा है। महिला शिक्षा हमारी संस्कृति और सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान भी महिला शिक्षा और सशक्तीकरण के महत्व को पहचाना गया था और इसके लिए प्रयास भी किए गए।

आज हम महिला सशक्तिकरण से महिला नेतृत्व में विकास के मार्ग पर हैं।

राजा राम मोहन रॉय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले जैसे समाज सुधारकों के प्रयासों से हमारे समाज में महिलाओं को उनका उचित स्थान देने का काम हुआ। और आज हम महिला सशक्तिकरण से महिला नेतृत्व में विकास के मार्ग पर चल रहे हैं।

पिछले वर्षों में देश में शिक्षा के इंफ्रास्ट्रक्चर में तेजी से वृद्धि

आप सभी जानते होंगे कि सभी को शिक्षा प्रदान करने के लिए, हमने वर्ष 2002 में 86वें संविधान संशोधन अधिनियम के माध्यम से संविधान में संशोधन किया, जिसके द्वारा 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा को एक मौलिक अधिकार बनाया गया है।

पिछले वर्षों में देश में शिक्षा के इंफ्रास्ट्रक्चर में तेजी से वृद्धि की गई है। इसके परिणामस्वरूप, पिछले दस वर्षों में उच्च शिक्षा में महिला नामांकन में 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आज हमारी छात्राएं खेलकूद से लेकर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, रक्षा, संचार प्रौद्योगिकी से लेकर अंतरिक्ष तक सभी क्षेत्रों में आगे हैं।

महिलाओं की सुरक्षा और उनका सशक्तिकरण -हमारा लक्ष्य

इस दिशा में निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए महिलाओं की सुरक्षा और उनका सशक्तिकरण सुनिश्चित करने हेतु 'मिशन शक्ति' नामक एक समग्र योजना की शुरुआत की गई है।

इसके अतिरिक्त, सरकार के स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं कि महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर मिलें, आगे बढ़ने के लिए सुविधाएं मिलें।

महिलायें अपनी क्षमता के अनुसार काम कर पाएं, इसके लिए सभी कानूनी प्रयास भी किए गए हैं। महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा के साथ साथ राजनीतिक empowerment के लिए सरकार द्वारा कानून बनाए गए हैं। स्थानीय लोकतान्त्रिक संस्थाओं से लेकर संसद तक महिलाओं के प्रतिनिधित्व के लिए प्रावधान किए गए हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के लिए एक नवीन और महत्वाकांक्षी रूपरेखा प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भविष्य के लिए ऐसी शैक्षणिक व्यवस्था का खाका प्रस्तुत करती है जहाँ विषयों के चुनाव में लचीलापन हो और छात्र अपने पसंद के विषय पढ़ पाएं।

इस नीति में केवल सैद्धांतिक ज्ञान के बजाय कौशल-आधारित शिक्षा पर बल दिया गया है। मुझे खुशी है कि वनस्थली विद्यापीठ ऐसा शैक्षणिक वातावरण प्रदान कर रहा है, जिसमें मूल्य आधारित समग्र शिक्षा प्रदान करने के साथ ही व्यक्तिगत विकास को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्रिय छात्राओ, मुझे इस बात में रत्ती भर भी संदेह नहीं है कि आप में से प्रत्येक अपने करियर में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करने जा रही हैं। आप जीवन में अलग-अलग व्यवसायों का चयन करेंगी। मैं आप सभी को बताना चाहता हूं कि भारत में आज अपार अवसर उपलब्ध हैं।

महिला स्व-सहायता समूह सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम

आप में से शायद काफी लोग जानते भी होंगे कि महिला स्व-सहायता समूह सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम बनकर उभरे हैं। यह 142 मिलियन परिवारों से जुड़ी सबसे बड़ी सूक्ष्म वित्त परियोजना बन गई है।

तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने का हमारा लक्ष्य

हमारे स्व-सहायता समूहों का सबसे उल्लेखनीय पहलू यह है कि पिछले एक दशक में इन समूहों द्वारा लिए गए 96 प्रतिशत से अधिक ऋणों का भुगतान कर दिया गया है। यह उनके वित्तीय अनुशासन को दर्शाता है। इसका सारा श्रेय देश की महिलाओं और उनके प्रबंधन कौशल को जाता है।

आत्मनिर्भरता की राह पर चलते हुए 9 करोड़ महिलाओं की भागीदारी के साथ 83 लाख स्व- सहायता समूहों ने करीब एक करोड़ महिलाओं को *लखपति दीदी* बनाने में मदद की है। आज जब हम महिलाओं के नेतृत्व में विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, सरकार ने तीन करोड़ महिलाओं को *लखपति दीदी* बनाने का लक्ष्य रखा है।

महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों की स्थापना

शिक्षित, महत्वाकांक्षी और उद्यमी महिलाओं के अभिनव प्रयासों में सहयोग देने के लिए मुद्रा योजना, स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया योजनाएं चलाई जा रही हैं।

मुद्रा योजना के अंतर्गत सरकार, महिलाओं के नेतृत्व में संचालित सूक्ष्म उद्यमों को 70 प्रतिशत अर्थात, एक मिलियन रुपये तक का ऋण आवंटित कर रही है।

पिछले दशक में महिला नेतृत्व वाले उद्यमों की संख्या 14 प्रतिशत से बढ़कर 20 प्रतिशत हो गई है। कई अन्य देशों की तुलना में भारत में महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों की संख्या अधिक है।

शिक्षित युवा होने के नाते समाज को आपसे काफी अपेक्षाएं

मैं आप सभी को यह याद दिलाना चाहता हूँ कि शिक्षित युवा होने के नाते समाज को आपसे काफी अपेक्षाएं हैं। आपको हमारे समाज का नेतृत्व करते हुए उसमें व्यापक बदलाव लाना है।

आपको राष्ट्र निर्माण की दिशा में आगे बढ़कर योगदान देना चाहिए। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप जनता से जुड़े मामलों में बढ़ चढ़कर भाग लें।

उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पूरे समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ अपनी भूमिका निभाएं।

हमारी सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था को बेहतर बनने के लिए जरूरी है कि हमारे उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पूरे समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ अपनी भूमिका निभाएं।

हमारी संसद लोगों की अपेक्षाओं को साकार करने और सामाजिक-आर्थिक और राजनैतिक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण माध्यम की भूमिका निभाती है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपकी संस्था में पंचमुखी शिक्षा कार्यक्रम के एक भाग के रूप में एक छात्र संसद भी है। निस्संदेह, यह छात्रों को हमारी संसदीय शासन व्यवस्था के कार्यकरण और प्रक्रियाओं से परिचित कराने का एक प्रभावी मंच है।

अपनी बात समाप्त करने से पहले, मैं वनस्थली विद्यापीठ की कुलपति, प्रोफेसर इना आदित्य शास्त्री जी और आप सभी का एक बार फिर से धन्यवाद करता हूँ और आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।